शासकीय डॉ0 वा0वा0 पाटणकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जेल रोड, केन्द्रीय विद्यालय के पास, दुर्ग (छ.ग.)

सेमीनार एवं वर्कशॉप

सत्र : 2016 – 17

दो दिवसीय कार्यशाला ''इनोवेटिव ट्रेंड एंड टेक्सटाइल डिजाईनिंग''

मुख्य अतिथि : डॉ. आर. शंगीता

प्रतिभागी एवं छात्राएँ

<u>प्रथम दिवस (दिनांक : 11.11.2016) :–</u>

शासकीय डॉ0 वा0वा0 पाटणकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय में 2 दिवसीय कार्यशाला ''इनोवेटिव ट्रेंड एंड टेक्सटाइल डिजाईनिंग'' का उद्घाटन कलेक्टर श्रीमती आर0 शंगीता के द्वारा सम्पन्न हुआ। गृह विज्ञान विभाग द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तत्वाधान में आयोजित इस कार्यशाला में अपने उद्बोधन में **कलेक्टर आर0 शंगीता** ने कहा कि सुंदरता बाहर की नहीं अंदर से होना चाहिए, जिंदगी में हर इंसान का अपना सम्मान है और हमें सबका सम्मान करना चाहिए और यह सब हमें संस्कार व पढ़ाई से मिलता है। छात्रजीवन में हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। उन्होनें कहा कि आजकल का युवा अपने अधिकारों के प्रति बहुत जागरूक हो गया है पर कर्तव्य के प्रति भी हमें उतनी ही निष्ठा रखनी चाहिए। उन्होनें छात्राओं को प्रेरणादायक संबोधन देते हुए अपने माता–पिता की सेवा व भावनाओं की कद्र करने को कहा। कार्यक्रम के अध्यक्ष **प्राचार्य डॉ0 सुशील चन्द्र तिवारी** ने कहा कि– टेक्सटाईल का जीवन में बड़ा महत्व है। जीवन के हर पल में मृत्यु तक इसकी उपयोगिता है। आज इस क्षेत्र में नई–नई तकनीक का प्रयोग हो रहा है। डिजाईन में भी हर क्षण परिवर्तन का दौर है। उन्होनें इस कार्यशाला के माध्यम से नये शोधों पर प्रकाश डाला जवेगा।

कार्यक्रम की **संयोजक डॉ0 मीनाक्षी अग्रवाल** ने कार्यशाला की रूपरेखा की चर्चा करते हुए दो दिवसीय कार्यशाला में देश के विभिन्न प्रांतो से आए विषय विशेषज्ञों के विषय में बताया तथा डिजाईन गैलरी के माध्यम से नये डिजाईन के प्रदर्शन को बड़ी उपलब्धि बताया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में सरस्वती वंदना के पश्चात् गृहविज्ञान विभाग की **विभागाध्यक्ष डॉ0 अमिता सहगल** ने अतिथियों को स्वागत करते हुए महाविद्यालय में कलेक्टर महोदया के प्रथम बार आगमन को उल्लेखनीय बतलाया। कार्यशला में प्रथम दिन चार तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया। **इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ के क्राफ्ट एवं डिजाईन विभाग के प्राध्यापक डॉ0 वेंकट आर गुडे** ने मुख्य विषय पर पर अपना व्याख्यान दिया।

अतिथिगण **टेक्सटाइल प्रदर्शनी**

द्वितीय सत्र में **नई दिल्ली की प्रसिद्ध डिजायनर एवं विशेषज्ञ श्रीमती सुधा जोशी लोहानी** ने डिजाईन के तत्वों पर प्रकाश डाला।

तृतीय एवं चतुर्थ सत्र में **शासकीय सरोजनी नायडू कन्या महाविद्यालय भोपाल की प्राध्यापक डॉ0 स्मिता जैन एवं डॉ0 रंजना उपाध्याय** ने थ्री डी फैशन एवं कपड़ों की सजावट पर व्याख्यान दिया। इस अवसर पर टेक्सटाईल्स कॉर्पोरेशन द्वारा मोबाईल वाहन से प्रदर्शनी लगाई गई। शासकीय महिला पॉलीटेक्नीक राजनांदगांव की छात्राओं ने डिजाईन गैलरी में विभिन्न प्रकार के वस्त्रों की प्रदर्शनी लगाई जिसे सभी ने सराहा। कार्यक्रम का **संचालक डॉ0 रेशमा लाकेश** ने तथा **आभार प्रदर्शन डॉ0 बबीता दुबे** ने किया। इस अवसर पर विभिन्न महाविद्यालयों के प्राचार्य, प्राध्यापक, शोध छात्र एवं छात्र–छात्राएँ उपस्थित थे।

इस कार्यशाला में टेक्सटाइल टेक्नालाजी के विभिन्न क्षेत्रों पर ज्ञानपरक व्याख्यान एवं कार्यशाला हुई जिसमें कलर, टेक्चर, इमेज, थ्री–प्रिंटिंग, ज्वेलरी डिजाईन, गुजरात, लखनऊ, बिहार, आंध्रा, महारष्ट्र प्रदेश के कांच वर्क, चिकन वर्क, मधुवनी की कला, कलमकारी, मोती वर्क पर विस्तृत चर्चा की गई। एक ओर जहाँ डिजाइनर कपड़ों की बात की तो वहीं छत्तीसगढ़ की गोदना कला पर कार्यशाला रखी गई। धान से बनने वाली उपयोगी ज्वेलरी, साड़ियों की डिजाइन आकर्षण का केन्द्र रही।

<u>द्वितीय दिवस (दिनांक 12.11.2016) :–</u>

कार्यशाला में दूसरे दिन **डॉ0 सरिता जोशी** ने टेक्सटाईल का मेडिकल क्षेत्र में उपयोगिता पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। **आई0एन0आई0एफ0डी0 की श्रीमती नजमा खान** ने दुपट्टे से विभिन्न डिजाइन की शैलियों के प्रकार एवं स्टाईल पर प्रशिक्षण दिया वहीं **श्रीमती स्मृतिराव बघेल** ने आकृति के अनुसार वस्त्रों की डिजाईन एवं रंगों का चयन पर प्रकाश डाला। नई दिल्ली के **नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नालाजी की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ0 वर्षा गुप्ता** ने भविष्य के फैशन एवं टेक्सटाईल्स पर महत्वपूर्ण व्याख्या दिया।

शासकीय मिनीमाता महिला पॉलीटेक्नीक राजनांदगांव के **प्राध्यापक डॉ0 मृदुल रत्न चौरसिया एवं श्रीमती सविता ठाकुर** ने कपड़ों के नये ट्रेंड्स तथा प्रिंटिंग एवं पेंटिग पर प्रकाश डाला एवं तकनीक की विस्तार से चर्चा की।

जलगाँव (महाराष्ट्र) के प्राध्यापक डॉ0 अनिता नागलेकर एवं डॉ0 दुर्गेश ने टेक्सटाईल डिजाईन पर सारगर्भित चर्चा की।

जलगाँव (महाराष्ट्र) के प्राध्यापक डॉ0 दुर्गेश एवं डॉ0 अनिता नागलेकर

समापन सत्र में **मुख्य अतिथि श्रीमती संगीता विक्टर, शाखा प्रबंधक भारतीय स्टेट बैंक**, मालवीय नगर दुर्ग थी। उन्होनें महिलाओं को इस क्षेत्र में नये–नये शोध कार्यों एवं तकनीक के विकास में सहभागिता को उल्लेखनीय बतलाया। प्रतिभागियों ने भी अपने विचार रखे तथा कार्यशाला की प्रशंसा की। इस अवसर पर लगाई गई प्रदर्शनी के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। महाविद्यालय के **प्राचार्य डॉ0 सुशील चन्द्र तिवारी** ने इस कार्यशाला में प्रस्तुत किए गए थ्री–डी उपकरण के माध्यम से प्रस्तुत डिजाईन को महत्वपूर्ण बताते हुए कार्यशाला को मील का पत्थर बताया।

विभिन्न प्रांतों से आए प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। संयोजक डॉ0 मीनाक्षी अग्रवाल ने कार्यशाला की उपयोगिता पर विचार प्रकट करते हुए समीक्षात्मक विवरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 रेशमा लाकेश ने किया तथा आभार प्रदर्शन डॉ0 बबीता दुबे ने किया।

कैरियर मार्गदर्शन कार्यशाला – ‘‘सुनहरे भविष्य की ओर’’

डॉ0 आर0एन0सिंह

डॉ0 प्रशांत बोकाड़े

डॉ0 विकास पंचाक्षरी

प्रथम दिवस (दिनांक : 08.12.2016) :–

महाविद्यालय में राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान के तहत दो दिवसीय कॅरियर मार्गदर्शन कार्यशाला ‘‘सुनहरे भविष्य की ओर’’ का शुभारंभ हुआ।

कार्यशाला के **मुख्यअतिथि डॉ0 आर0एन0 सिंह प्राचार्य शासकीय दिग्विजय पी0जी0 महाविद्यालय, राजनांदगांव** थे, **अध्यक्षता श्री संतोष पराजपे, लक्ष्य एकेडमी** ने की।

डॉ0 सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि हमारे अचंल के विद्यार्थियों में योग्यता, ज्ञान की कमी नहीं है बस सोच में कमी है, लक्ष्य को पूरा करने की चुनौती का सामना करना है। उन्होनें आत्मसम्मान, आत्मविश्ववास और आत्मनियंत्रण को बड़े ही अच्छे ढंग से रेखांकित करते हुए कहा कि हमें अपनी क्षमता को पहचानना आना चाहिए। छात्राएँ ईश्वर की सुंदर कृति है आपमें पूरी क्षमता व योग्यता है जिससे आप लक्ष्य तक पहुँच सकती है।

कार्यशाला के प्रमुख वक्ता **डॉ0 प्रशांत श्रीधर बोकाड़े** ने कहा कि हम सभी स्मार्ट है। दुनिया में हमसें अपेक्षाएँ बढ़ी है। युवाओं से ही उम्मीदे टिकी है। ‘‘युवा कुछ करेंगे तो युवा कुछ बनेंगे। उन्होनें बताया कि हमें परिस्थितियों को अपने अनुसार ढालना आना चाहिए। सकारात्मकता की ओर ध्यान देना आवश्यक है। डॉ0 बोकाड़े ने व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयामों की सारगर्भित चर्चा की।

महाविद्यालय के **प्राचार्य डॉ0 सुशील चन्द्र तिवारी** ने कहा कि यह कार्यशाला स्नातक अंतिम वर्ष की छात्राओं के लिए आयोजित की गई है, उनके लक्ष्य निर्धारण, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी तथा स्वरोजगार की दिशा तय करने में यह सहायक होगी। उन्होनें कहा कि हमें स्वयं अपनी राह चुननी है और उसके लिए लक्ष्य निर्धारित करना होगा।

कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे श्री संतोष परांजपे ने कहा कि लोक सेवा आयोग तथा संघ लोक सेवा आयोग की तैयारी के लिए कार्यशाला उपयोगी साबित होगी। उन्होनें इसके लिए महत्वपूर्ण टिप्स भी दिए।

लक्ष्य एकेडमी की छात्रा कु0 श्वेता देवांगन ने भी अपने विचार रखे। **दुर्ग विश्वविद्यालय के विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी श्री विकास पंचाक्षरी** ने व्यक्तित्व विकास पर प्रकाश डाला तथा छोटे–छोटे प्रयोगों के माध्यम से विद्यार्थियों को इसका महत्व समझाया।

कार्यशाला के प्रारंभ में **संयोजक डॉ0 निसरीन हुसैन** ने दो दिवसीय कार्यशाला के कार्यवृत्त पर प्रकाश डाला। **छात्रसंघ अध्यक्ष कु0 रूचि शर्मा** ने कार्यशाला को छात्राओं के लिए बहुत उपयोगी एवं महत्वपूर्ण बताया। छात्रसंघ के सभी पदाधिकारियों ने कार्यशाला की व्यवस्था में सक्रिय भागीदारी दी। कार्यक्रम का **संचालन डॉ0 ऋचा ठाकुर** ने किया तथा आभार प्रदर्शन **डॉ0 बबिता दुबे** ने किया।

द्वितीय दिवस (09.12.2016) :–

सफलता के लिए जुनून आवश्यक – डॉ0 संतोष राय

प्रतिभागी एवं छात्राएँ

द्वितीय दिवस **कॉमर्स गुरू डॉ0 संतोष राय** ने अपना प्रभावी उद्‌बोधन दिया। उन्होनें छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि परिवर्तन सृष्टि का नियम है हमें रूढ़ीवादी विचारधारा, नकरात्मक विचारों को निकाल फेंकना है। सफलता तभी मिलती है जब जुनून होता है। हमें सफल होना है तो रूचि, पसंद और सकारात्मकता की ओर सोचना होगा। उन्होनें कहा कि हमें आम नहीं खास बनना है इसके लिए एक जिद् होनी चाहिए जो हमें मंजिल तक पहुँचा सके। जिद् सकारात्मक होनी चाहिए। सीखने को जहाँ से मिले सीखो। अपने प्रभावी अंदाज में डॉ0 राय ने छात्राओं में नया उत्साह एवं ऊर्जा का संचार किया।

कार्यशाला में **श्री आशीष कुमेटी, लक्ष्य एकेडमी** ने छात्राओं को छत्तीसगढ़ लोकसेवा आयोग की परीक्षा के संबंध में जानकारी दी। उन्होनें प्रारंभिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा तथा साक्षात्कार के तीनों चरणों की विस्तृत चर्चा करते हुए इस परीक्षा की तैयारी के लिए महत्वपूर्ण टिप्स दिए।

महाविद्यालय के **प्राचार्य डॉ0 सुशील चन्द्र तिवारी** ने विद्यार्थियों को परीक्षाओं की तैयारी के साथ ही अपने कैरियर के प्रति भी सचेत रहने की बात कही। उन्होनें विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के साथ स्नातक स्तर की ''अंग्रेजी भाषा'' की तैयारी के लिए शीघ्र ही विशेष कक्षाएँ प्रारंभ करने की जानकारी दी।

द्वितीय सत्र में **सिटकॉन के श्री हेमंत घोटे** ने शासन की विभिन्न कौशल विकास की योजनाओं पर प्रकाश डाला तथा लघु उत्पादों के निर्माण की तकनीक बताई। उन्होनें विभिन्न लघु उत्पाद के अन्तर्गत फिनॉयल, मोमबत्ती, डिटर्जेन्ट पावडर, सोप बनाने की विधि को भी छात्राओं को सिखाया। जिसे बड़े, उत्साह से छात्राओं ने सीखा। श्री घोटे ने स्वरोजगार हेतु विभिन्न ऋण योजनाओं की जानकारी दी।

कार्यक्रम का **संचालन डॉ0 ऋचा ठाकुर** ने किया तथा **आभार प्रदर्शन डॉ0 लता मेश्राम** ने किया। कार्यशाला के अंत में छात्राओं को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

भारतीय शास्त्रीय संगीत पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

मुख्य अतिथि
श्री हेमचंद यादव

प्रतिभागी एवं छात्राएँ

अतिथिगण

प्रथम दिवस (06.01.2017) :– विचार संगीत से उत्पन्न होता है :– हेमचंद यादव

महाविद्यालय, के संगीत विभाग के द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सौजन्य से भारतीय शास्त्रीय संगीतः समय और समाज की धारा के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में'' पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। संगोष्ठी का उद्घाटन **पूर्व मंत्री श्री हेमचंद यादव** ने किया। उन्होनें अपने उद्बोधन में कहा कि संगीत वह विद्या है जो मन मस्तिष्क और शरीर को पूरी तरह बदल देता है, विचार संगीत से ही उत्पन्न होता है, ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो उससे प्रभावित नहीं हुआ हो। युद्ध के मैदान में भी जब तक रणभेरी नहीं बजती है तब तक युद्ध प्रारम्भ नहीं होता। जीवन के लिए संगीत महत्वपूर्ण व उपयोगी है संगीत में रोंगटे खड़े कर देने की शक्ति व ताकत है। शास्त्रीय संगीत एक साधना है पर आजकल शास्त्रीय संगीत के प्रति लोगों की रूचि कम है, हमें लोगों को शास्त्रीय संगीत के माध्यम से आनन्द की ओर ले जाना चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 सुशील चन्द्र तिवारी ने कहा कि संगीत एक ऐसी कला, विधा, ज्ञान और विज्ञान है जिसके विषय में असिमित शब्द भंडार है। आज वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास के कारण संगीत का खूब प्रसार हो रहा है।

उन्होनें कहा कि विज्ञान में हम पढ़ते है कि ध्वनि में तापीय और प्रकाशीय उर्जा होती है और वह प्राणियों के विकास में उतना ही महत्वपूर्ण स्थान रखती है जितना अन्न और जल। डॉ0 तिवारी ने कहा कि संगीत सुगम–सहज और हृदयस्पर्शी होना चाहिए जो तनाव को दूर कर शांति, संतोष दे सके।

संगोष्ठी के मुख्य वक्ता, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ के डॉ0 अनिल व्यौहार ने अपने वक्तव्य में कहा कि किसी भी संगोष्ठी का आधार वक्तव्य संगोष्ठी में उपस्थित शोध करने वालों के लिए दिशा निर्देश होता है। भूख, निद्रा सभी प्राणियों में एक जैसे होता है किन्तु मनुष्य संगीत के कारण उन प्राणियों से अलग होता है। संगीत के साथ गायन, वादन और नृत्य का संबंध होता है। संगीत एक प्रयोगात्मक कला है जिसमें परिवर्तन होता रहता है किन्तु यह परिवर्तन बहुत थोड़ा होता है। आधुनिक संदर्भ में जो परिवर्तन हो रहा है उसका विश्लेषण करने की आवश्यकता है। सभी कला साधकों के एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझने की आवश्यकता है। समाज के उत्थान में संगीत का योगदान एवं संगीत का पारम्पकि रूप इस विषय पर विस्तार से व्याख्यान दिया।

कार्यक्रम में मुम्बई के सुप्रसिद्ध शास्त्रीय ख्याल गायक श्री सत्यशील देशपाण्डे विशिष्ठ अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री देशपाण्डे जी की प्रस्तुति संगोष्ठी में द्वितीय दिवस पर होगी। संगोष्ठी में कोलकाता, इलाहाबाद, मुंबई, जयपुर, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश के शोधार्थी भी अपने शोधपत्र प्रस्तुत करेगें। कार्यक्रम का संचालित डॉ0 मिलिन्द अमृतफले ने किया। संगोष्ठी में महाविद्यालय के प्राध्यापकों, विद्यार्थियों के साथ संगीत प्रेमी भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

द्वितीय दिवस (दिनांक : 07.01.2017) :–

संगीत में नवनिर्माण सतत् जारी है.... डॉ0 सत्यशील देशपाण्डे

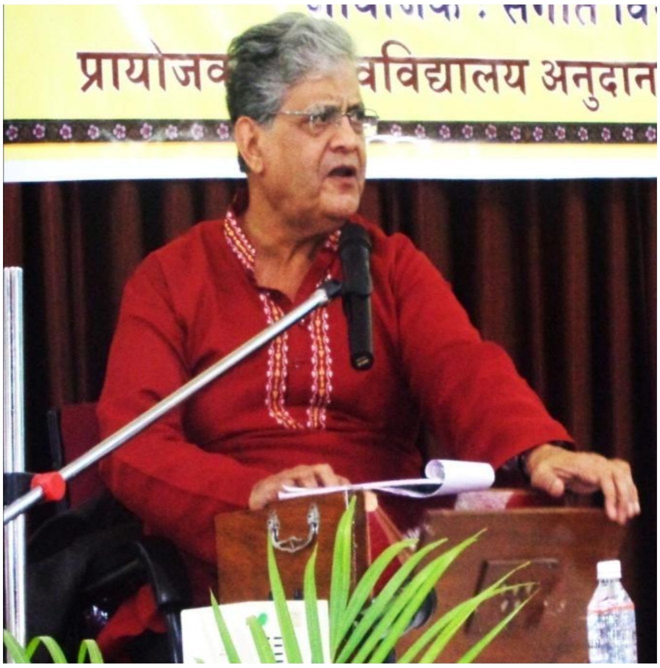

प्रतिभागी एवं छात्राएँ

श्री सत्यशील देशपाण्डे अपनी प्रस्तुति देते हुए

प्रोफेसर मुकुन्द भाले जी का तबला वादन

महाविद्यालय में ''भारतीय शास्त्रीय संगीत : समय और समाज की धारा के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में'' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन बेहतरीन प्रस्तुतियाँ हुई।

संगीत विभाग की छात्राओं द्वारा स्वरों की उपासना तारों की साधना विद्या की देवी माँ सरस्वती की अराधना के साथ द्वितीय दिवस का प्रथम सत्र आरंभ हुआ। प्रथम सत्र के विषय विशेषज्ञ डॉ0 सत्यशील देशपाण्डे शास्त्रीय खयाल गायक मुम्बई ने ''जड़े– (संदर्भ संगीत घरानों की सार्थकता एवं योगदान विषय पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होनें कहा कि – मैं यहाँ जिस संगीत की बात कर रहा हूँ वह विगत सौ सवा सौ सालों में उत्तर हिन्दुस्तानी गायन पद्धति में जिसने जड़ पकड़ी है उस राग संगीत की है उत्तर भारतीय संगीत के 'घराने' याने ही विशिष्ट एवं विभिन्न सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टिकोणों का कम से कम तीन पीढ़ियों में पाया जाने वाला सतत्य सिलसिला होता है, हर घराने की बढ़त के अपने निजी कायदे–कानून होते हैं।

संगीत के आगरा, जयपुर, किराना यह सभी घराने अपने परम उत्कर्ष पर थे हर घराने की गायन परम्परा का अलगपन दूसरे से बहुत स्पष्ट है। पारंपरिक कला मूल्य अमिट है। सब पारंपारिक कला मूल्यों के अनोखे और विभिन्न कलात्मक उपयोगों से परम्पराएँ बनती है और इन्हीं मूल्यों की पुनर्रचना से परम्पराएँ प्रवाहित रहती है और किसी दूसरी परम्परा के प्रवाह से जुड़ भी जाती है। इसे ही नव निर्माण समझा जाता है। भिलाई से पधारे श्री रामचन्द्र सर्पे ने तबले पर संगत की।

डॉ0 स्मिता सहस्त्रबुद्धे ने राग समय सिद्धान्त की उपादेयता विषय पर शोध पत्र का वाचन प्रस्तुत किया राग और रस का घनिष्ठ संबंध है राग स्वरों से बनते है रसों की सृष्टि मूलतः स्वरों पर निर्भर करती है। विश्व भारती विश्वविद्यालय शांति निकेतन से आयी डॉ0 इशिता चक्रवर्ती ने कल्चरिंग सिंगिंग वाइस पर अपने शोधपत्र का वाचन प्रस्तुत किया।

डी0बी0 गर्ल्स महाविद्यालय से नृत्य की सहायक प्राध्यापक डॉ0 स्वप्निल करमहे ने कत्थक का सौन्दर्य पक्ष विषय पर अपना शोधपत्र का वाचन प्रस्तुत किया। इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय से आये श्री हिमांशु ने ग्वालियर घराने की नाद परम्परा विषय पर शोधपत्र का वाचन प्रस्तुत किया।

समापन सत्र में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो0 जयंत खोत ने ग्वालियर घराने के जयदेव की अष्टपदि और टप्पा के विषय में प्रस्तुति दी। इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय के प्रो0 मुकुन्द भाले ने तबले की परम्परा एवं सौन्दर्य पक्ष पर विचार प्रस्तुत किये तथा कहा कि तबले की अपनी भाषा है जिसे समझने में कठिनाई भी होती है। तबला उतना ही पुराना है जितना संगीत। उन्होनें अपनी प्रस्तुति के माध्यम से तबला वादन की कला को प्रस्तुत किया।

समापन समारोह के अवसर पर मुख्यअतिथि की आसंदी से बोलते हुए प्रो0 मुकुन्द भाले ने कहा कि इस तरह की संगोष्ठियाँ विषय को जीवन्त करती है तथा हमें सीखलाती है।

समापन समारोह में जनभागीदारी समिति के अध्यक्ष श्रीमती गायत्री वर्मा ने अपने उद्‌बोधन में संगीत की सुधीर्घ परम्परा को बनाये रखने के लिये किये जा रहे सेमीनार को मिल का पत्थर बताया। संगोष्ठी का संचालन संगीत विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ0 मिलिन्द अमृतफले ने किया। कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र वितरित किये गये। कार्यक्रम में विभिन्न प्रांतो से आये प्राध्यापक, विद्यार्थी तथा स्थानीय पत्रकारगण बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

वनस्पति शास्त्र विभाग एवं माइक्रोबालॉजी विभाग के संयुक्त तत्वाधान में राष्ट्रीय संगोष्ठी

प्रथम दिवस (28.01.2017) :–

माइक्रोबायलॉजी में शोध की आपार संभावनाएँ – डॉ0 नायक

अतिथिगण

प्रतिभागी एवं छात्राएँ

डॉ0 नायक व्याख्यान देते हुए

महाविद्यालय में वनस्पति शास्त्र विभाग एवं माइक्रोबालॉजी विभाग के संयुक्त तत्वाधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आज शुभारंभ हुआ। संगोष्ठी के **मुख्य अतिथि डॉ. एम.एल. नायक भूतपूर्व प्राध्यापक पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर** थे। संस्था प्रमुख **प्राचार्य डॉ. सुशील चन्द्र तिवारी** ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। डॉ. नायक ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि ''शोध का क्षेत्र पहले सीमित था लेकिन अब शोध का क्षेत्र विस्तृत हो गया है। उन्होनें अपने आधार व्यक्तव में कहा कि ''छत्तीसगढ़ के वनों के संरक्षण एवं उनकी उपयोगिता तथा छत्तीसगढ़ के तालाबों का सर्वेक्षण किया गया है। उसमें अनेक प्रकार के बैक्टीरिया पाये गये है। प्रदूषित तालाब में लोग नहाते है जिनमें बैक्टीरिया की अधिकता होती है। सभी बैक्टीरिया बीमारी फैलाने वाले नहीं होते हैं। छत्तीसगढ़ में धारणा है कि बीमारियाँ देवी–देवताओं से होती है किन्तु ऐसा नहीं है। बीमारियाँ माइक्रोब्स से होती है। यदि घातक माइक्रोब्स तालाब में है तो उसे उपयोग में नहीं लाना चाहिए। डॉ. नायक ने बायोटेक्नोलॉजी के नये शोध क्षेत्रों तथा वैज्ञानिकों की भूमिका की सविस्तार चर्चा की। उन्होनें बड़े सरल तरीके से छत्तीसगढ़ के वनों एवं तालाबों विशेषकर रायपुर के तालाबों के सर्वेक्षण को विद्यार्थियों को बताया।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. सुशील चन्द्र तिवारी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि ''संगोष्ठी का विषय बहुत व्यापक है। माइक्रोबायोलॉजी ज्ञान का भंडार है। इसके माध्यम से पौधों में जीवन चक्र की विशेषतायें ज्ञात की जाती है। पौधों और प्राणियों में संवेदनशीलता एक जैसी होती है। खोजी प्रवृत्ति के कारण पौधों के संबंध में

विश्वस्तरीय शोध चल रहा है इस संगोष्ठी के माध्यम से हमारी भी भागीदारी होगी। मानव हो या वनस्पति अंधाधुंध हैवी मेटल से पर्यावरण को भारी नुकसान हो रहा है। यह शोध इस दृष्टि से बड़ा उपयोगी सिद्ध होगा। इसके पूर्व संयोजक डॉ. ऊषा चंदेल ने संगोष्ठी के विषय एवं उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

प्रथम सत्र के विषय विशेषज्ञ डॉ. आर. शांति अय्यर विभागाध्यक्ष ''लाईफ साईंस एवं फोरोन्सिक साईंस'' जैन यूनिवर्सिटी बैंगलुरू ने वनस्पति के साइटो टाक्सिक गुणों के मूल्यांकन पर प्रकाश डाला। सत्र अध्यक्ष डॉ. रेखा पिपलगांवकर थी। द्वितीय सत्र के विषय विशेषज्ञ – डॉ. विमल कुमार कानूनगो विभागाध्यक्ष वनस्पति शास्त्र नागार्जुन विज्ञान स्ना. महाविद्यालय रायपुर ने ''छत्तीसगढ़ में पाये जाने वाले पौधों के स्पीशीज संगठन एवं फाइटो रसायन के कारण अधिकाधिक वृद्धि'' पर व्याख्यान दिया। सत्र अध्यक्ष डॉ. रूपिन्दर दीवान थी। तृतीय सत्र के विषय विशेषज्ञ डॉ. एस. के. जाधव विभागाध्यक्ष बायोटेक्नालॉजी पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर ने ऊर्जा संसाधनों के वैकल्पिक स्वरूप पर व्याख्यान दिया।

विभिन्न क्षेत्रों से आये प्रतिभागियों ने शोध पत्र का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ऋचा ठाकुर ने किया। आभार प्रदर्शन डॉ. एम. एल. प्रसुन्ना आयोजन सचिव ने किया। इस अवसर पर पोस्टर प्रदर्शनी एवं संगोष्ठी पर विभिन्न क्षेत्रों से आये आलेखों का ''शोध सार'' की पुस्तक स्मारिका का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया।

द्वितीय दिवस (29.01.2017) :–

डॉ. सतीश चिले पोस्टर देखते हुए

व्याख्यान देते हुए डॉ. प्रतिमा करियार

महाविद्यालय, में माइक्रोबॉयलाजी की राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन विभिन्न विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान हुए। वहीं शोध छात्र–छात्राओं ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। शासकीय पी.जी. महाविद्यालय सिवनी के डॉ. सतीश चिले ने ''पैथोजेनेसिस के अंतर्गत राइजोम्स नोड्यूसेस एंजाइम की फल उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका की विस्तार से चर्चा की। डॉ. सतीश चिले ने बताया कि एक ओर हम वनस्पति की नई–नई किस्में उत्पन्न कर रहे है वहीं उत्पादन क्षमता बढ़ाने वाली प्रजातियाँ भी विकसित की गई है।

उन्होनें बताया कि एंजाइमस की भूमिका बहुत उपयोगी हो गई है। कम समय में अधिक उत्पादन के साथ फलों की प्रजातियों को संरक्षित रखने एवं नष्ट होने से बचाने के लिए भी हम इनका उपयोग करते है। सूक्ष्मजीवों शोध में नवाचार इन्हीं को लेकर व्यापक तौर पर हो रहा है।

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर की वैज्ञानिक डॉ. प्रतिमा करियार ने सतत् कृषि उत्पादन में उपयोगी सूक्ष्मजीवों की भूमिका पर व्याख्यान दिया।

डॉ. करियार ने कहा कि कृषि उत्पादन में नई प्रजातियों के विकास से उत्पादन क्षमता में वृद्धि हुई है। बढ़ते उत्पादन के साथ प्रबंधन की महत्ता को आवश्यक बतलाते हुए उन्होनें सूक्ष्मजीवों के लिए हो रहे शोध पर प्रकाश डाला। भिलाई महिला महाविद्यालय की प्राध्यापक डॉ. भावना पांडे ने कार्बनिक एवं अकार्बनिक उर्वरकों की उत्पादन में भूमिका की चर्चा की। वनस्पतिशास्त्र की वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. सुषमा मेने ने शोध पत्र वाचन पत्र की अध्यक्षता की।

उन्होनें शोधार्थियों को महत्वपूर्ण टिप्स भी दिए। विभिन्न महाविद्यालयों के प्राध्यापकों एवं शोध छात्रों ने शोध पत्रों का वाचन किया। समापन सत्र में मुख्य अतिथि डॉ. दिपक कारकून पूर्व प्राचार्य थे। उन्होनें अपने उद्बोधन में सूक्ष्मजीव विज्ञान की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए शोध संगोष्ठियों के द्वारा नये शोध कार्यो की जानकारी सुलभ होने को उल्लेखनीय बताया। डॉ. कारकून ने विश्वविद्यालय स्तर पर वनस्पति शास्त्र परिषद के गठन की आवश्यकता बतलाई। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रसुन्ना ने किया। इस अवसर पर संगोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. प्रज्ञा कुलकर्णी ने किया। संगोष्ठी में कु. धनेश्वरी, कु. सिमरन, कु. भुनेश्वरी, कु. लवली श्रीवास को सहभागिता के लिए सम्मानित किया गया। अंत में डॉ. ऊषा चंदेल ने आभार प्रदर्शन किया।

प्राणीशास्त्र विभाग द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

प्रथम दिवस (दिनांक : 05.02.2017) :–

<u>प्राणियों के व्यवहार से प्रभावित होता है पर्यावरण – डॉ. पाण्डेय</u>

डॉ. एस.के. पाण्डेय

प्रतिभागी एवं छात्राएँ

अतिथिगण

महाविद्यालय में प्राणीशास्त्र विभाग द्वारा प्राणियों के व्यवहार का मानव जीवन एवं वातावरण में प्रभाव विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के कुलपति डॉ. एस.के. पाण्डेय के मुख्य आतिथ्य एवं प्राचार्य डॉ. सुशीलचन्द्र तिवारी के अध्यक्षता में हुआ। अपने संबोधन में डा. एस. के. पाण्डेय ने कहा कि ब्रम्हाण्ड का विकास देखे तो हम आखिरी छोर में खड़े है। सौर परिवार का ग्रह पृथ्वी वायुमण्डल से घिरा है जिसमें वनस्पति एवं जंतु दोनों उपस्थित है। उन्होनें कहा कि मानव ही ऐसा प्राणी है जिनमें सोचने एवं समझने की क्षमता, नवीनता, सृजनात्मकता व संवेदना है। मानव द्वारा प्रकृति से छेड़छाड़ से दुष्परिणाम के कारण हमें बहुत सी समस्याओं से जूझना पड़ता है। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. तिवारी ने कहा कि इस संगोष्ठी का विषय व्यापक है जो विभिन्न विषयों को जोड़ता है। उन्होनें कहा कि हमारा व्यवहार तीन चीजों पर आधारित है। इच्छा, ज्ञान एवं भावनाएँ, हमारे व्यवहार को निर्धारित करती है। संगोष्ठी के प्रारंभ में संयोजक डॉ. निसरीन हुसैन ने सूक्ष्मजीव एवं जानवरों के व्यवहार का मनुष्य के जीवन और वातावरण में पड़ने वाले प्रभाव पर प्रकाश डाला। उन्होनें बताया कि देश के विभिन्न क्षेत्रों से 90 शोधपत्र प्राप्त हुए है। संगोष्ठी में शोधपत्रों पर आधारित स्मारिका का विमोचन भी किया गया। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता सिकल सेल संस्थान छत्तीसगढ़ के डायरेक्टर डॉ. पी.के. पात्रा थे। उन्होनें कैंसर के लक्षणों के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। विभिन्न रोगों में वातावरण के प्रभाव का रोचक वर्णन दिया।

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में डॉ. चैतन्य निगम ने पशुजन्य रोगों के विषय में अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। वाइल्ड लाईफ फोटोग्राफर डॉ. प्रणव रॉय ने विडियो फिल्म के माध्यम से वन्यजीवों के व्यवहार पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। संगोष्ठी में डॉ. प्रणव रॉय के वन्य जीवों पर आधारित कैलेण्डर का विमोचन भी किया गया।

संगोष्ठी के तृतीय सत्र में सी.एम.डी. महाविद्यालय बिलासपुर के डॉ. व्ही. के. गुप्ता ने जीव–जन्तुओं के विकास पर प्रकाश डाला। विभिन्न महाविद्यालयों से आये शोध छात्र–छात्राओं ने इस अवसर पर अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ऋचा ठाकुर, डॉ. निसरीन हुसैन ने किया। आभार प्रदर्शन डॉ. लता मेश्राम ने किया।

वनस्पतिशास्त्र विभाग द्वारा तथा रसायनशास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कार्यशाला

दिनांक : 06.02.2017 :–

वन का संरक्षण महत्वपूर्ण लक्ष्य – के. सुब्रमण्यम

के. सुब्रमण्यम

प्रतिभागी एवं छात्राएँ

अतिथिगण

शासकीय डॉ. वा.वा. पाटणकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग में वनस्पतिशास्त्र विभाग द्वारा वनसंरक्षण पर तथा रसायनशास्त्र विभाग द्वारा रसायनों का दैनिक जीवन में उपयोग विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन अखिल भारतीय वन सेवा के अधिकारी डॉ. के. सुब्रमण्यम ने किया।

उन्होनें अपने संबोधन में कहा कि छत्तीसगढ़ में वनों की अधिकता हमारे पारिस्थतिक तंत्र को मजबूत करती हैं किंतु इसमें लगातार हो रही कमी चिंता का विषय है। यह कमी हमारे पर्यावरण व जैवविविधता को प्रभावित करती है। उन्होनें वनसंरक्षण को आज के समय का महत्वपूर्ण लक्ष्य बताया। डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के प्राध्यापक डॉ.ए.पी. मिश्रा ने रसायनों के दैनिक उपयोग और उनकी अधिकता तथा दुरूपयोग पर चर्चा करते हुए कहा कि अधिकतम उर्वरकों एवं कीटनाशकों का उपयोग भूमि की उर्वराशक्ति को ही नहीं प्रभावित करता बल्कि हमारे जीवन शैली को बदल रहा है। रोटी, कपड़ा और मकान के बाद अब हम स्वास्थ्य और शिक्षा के साथ क्वालिटी पर केन्द्रित हो गये है। उन्होनें उद्योगों के कारण हो रहे घातक रसायनों के दुष्प्रभाव की भी चर्चा की। कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. सुशील चन्द्र तिवारी ने कहा कि विज्ञान अभिशाप और वरदान पर पहले लिखा जाने वाला निबंध अब अभिशाप पर पर ज्यादा लिखा जाने लगा है क्योंकि हमने जानने के बाद भी दुरूपयोग करना बंद नहीं किया है और इसके भयावह परिणाम को भोग रहे है।

हुगली विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल के डॉ. एम.एल. घोष ने भी वनसंरक्षण पर नये शोधों पर प्रकाश डालते हुए विभिन्न वनस्पति प्रजातियों की चर्चा की।

कार्यक्रम की संयोजक डॉ. आरती गुप्ता ने कार्यशाला के उद्देश्यों को बताते हुए कृषि, चिकित्सा एवं औद्योगिक क्षेत्रों में हो रहे शोध कार्यो को प्रस्तुत करने का इसका मुख्य जरिया बताया। वनस्पति शास्त्र की विभागाध्यक्ष डॉ. ऊषा चंदेल ने वनों की घटती संख्या पर चिंता व्यक्त करते हुए संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयासों की चर्चा की। दूसरे सत्र में डॉ. डी.एन. शर्मा तथा डॉ. एच.एन. दुबे के व्याख्यान हुए। डॉ. शर्मा ने प्रयोगों के माध्यम से विस्तृत प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में विभिन्न प्रदेशों से प्राध्यापक एवं शोध छात्र उपस्थित थे। इस अवसर पर पोस्टर प्रदर्शनी का भी आयोजन किया। कार्यक्रम में आभार प्रदर्शन डॉ. सुनिता गुप्ता ने किया।

शासकीय डॉ.वा.वा.पाटणकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

हिन्दी साहित्य विभाग द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

प्रथम दिवस (दिनांक : 07.02.2017)

प्रेम उच्च कोटि का आध्यात्मिक मूल्य है – उदयन बाजपेयी

श्री उदयन बाजपेयी **प्रतिभागी एवं छात्राएँ** **अतिथिगण**

शासकीय डॉ. वा.वा. पाटणकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग में हिन्दी साहित्य विभाग द्वारा ''हिन्दी साहित्य में प्रेम अभिव्यक्ति के विविध आयाम'' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग के अध्यक्ष डॉ. विनय कुमार पाठक के मुख्य आतिथ्य एवं सुप्रसिद्ध कवि एवं समीक्षक उद्यन बाजपेयी की अध्यक्षता में हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कवि एवं समीक्षक उद्यन बाजपेयी ने कहा कि भारत का रीतिकालीन साहित्य विश्व में सर्वश्रेष्ठ है और वह प्रथम पंक्ति साहित्य है। गीत–गोविन्द इस देश की सर्वोकृष्ट रचना है। उन्होनें अभिनव गुप्त द्वारा प्रेम की व्याख्या का प्रसंग सुनाया। विद्यापति को महान कवि निरूपित करते हुए कहा कि उनके प्रेम गीतों में शरीर नहीं अपितु आत्मा का संदर्भ है। प्रेम उच्च कोटि का आध्यात्मिक मूल्य है। उन्होनें प्रेम और सौंदर्य की व्याख्या करते हुए बताया कि विप्रबन्ध श्रृंगार व संयोग श्रृंगार में अन्तर है। परकिया नायिका का वर्णन करते हुए प्रेम की अभिव्यक्ति को उच्च आयाम प्रदान किया। इस अवसर पर उन्होनें हिन्दी साहित्य के साहित्यकारों द्वारा रचित प्रेम साहित्य के उदाहरण प्रस्तुत की। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, पंत एवं प्रेमचंद के साहित्य को विषय सन्दर्भ में प्रस्तुत करते हुए प्रेम की अभिव्यक्ति की व्याख्या की। उन्होनें प्रख्यात कवि कमलेश द्वारा रचित विष्णुप्रिया का पाठ भी किया।

डॉ. विनय कुमार पाठक ने अपने संबोधन में प्रेम के संदर्भ में श्रृंगार शब्द की व्याख्या करते हुए कहा कि श्रंगार को समझे बिना प्रेम की अनुभूति संभव नहीं है। जिसमें दो प्रकार की संयोग एवं वियोग अनुभूतियाँ हैं। उन्होनें श्रृंगार को रसराज निरूपित करते हुए सौंदर्य की व्याख्या की। उन्होनें कहा कि श्रंगार के माध्यम से ही प्रेम को समझा और अभिव्यक्त किया जा सकता है। प्रकृति से ही सुख–दुःख और प्रेम के भावों को समझा जा सकता है। उन्होनें प्रेम की प्रबलता की प्रवाह को छांयावाद की कवियों की देन कहा। छायावाद के आगे हरिवंशराय बच्चन द्वारा प्रतिपादित हालावाद को भी प्रेम की अभिव्यक्ति का माध्यम बताया।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए प्राचार्य डॉ. सुशील चन्द्र तिवारी ने कहा कि हमारी संस्कृति और साहित्य के मूल में प्रेम है। हिन्दी साहित्य के विद्वानों प्रेम को जाति, धर्म, सम्प्रदाय, सरहद के बजाय आदर्श की स्थापना की है।

इस अवसर पर डॉ. हंसा शुक्ला एवं डॉ. आई.एन. सिंह ने भी अपने विचार प्रस्तुत की। संगोष्ठी के पूर्व आयोजन सचिव डॉ. यशेश्वरी ध्रुव ने संगोष्ठी की विषय–वस्तु पर प्रकाश डाला।

डॉ. हंसा शुक्ला ने कहा कि – प्रेम का अर्थ केवल नायक–नायिका तक ही सीमित नहीं है। सच्चा प्रेम वह होता है जहाँ कामना और स्वार्थ न हो। प्रेम दाता है वह याचना नहीं करता। उन्होनें प्रेमचंद की रचना गोदान की चर्चा की। संगोष्ठी में छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश एवं उड़ीसा से शोधकर्ताओं ने भाग लिया और अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। संगोष्ठी का संचालन डॉ. यशेश्वरी ध्रुव ने किया तथा सत्रान्त में श्रीमती ज्योति भरणे ने आभार प्रदर्शन किया।

द्वितीय दिवस (दिनांक : 08.02.2017)

साहित्य के सृजन में परम्परा का विशेष महत्व है – प्रभात त्रिपाठी

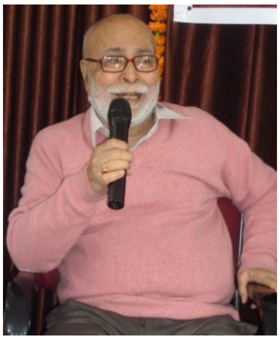

सुप्रसिद्ध लेखक डॉ. प्रभात त्रिपाठी डॉ. चन्द्र कुमार जैन व्याख्यान देते हुए

शासकीय डॉ. वा.वा. पाटणकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग में हिन्दी साहित्य विभाग द्वारा ''हिन्दी साहित्य में प्रेम अभिव्यक्ति के विविध आयाम'' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन डॉ. सुमन मिश्र के मुख्य आतिथ्य में हुआ। समापन समारोह में मुख्यअतिथि डॉ. सुमन मिश्र ने कहा कि विभिन्न कालखण्डों में प्रेम की अभिव्यक्ति और स्वरूप भिन्न–भिन्न थे। आज के दौर में प्रेम के स्वरूप में ठहराव का अभाव दृष्टिगोचर होता है और यह चिंता का विषय भी है।

संगोष्ठी के दूसरे दिन मुख्य वक्ता सुप्रसिद्ध लेखक डॉ. प्रभात त्रिपाठी थे। उन्होनें अपने संबोधन में कहा कि साहित्य लेखन के पूर्वकाल से ही प्रेम तत्व उपस्थित रहा है। साहित्य के सृजन में परम्परा का विशेष महत्व है। उन्होनें इस बात पर जोर देते हुए कहा कि प्रेम साहित्य लेखन के लिये प्रेम नहीं अपितु प्रेम की अभिव्यक्ति आवश्यक है और जिसमें देहानुभूति के स्थान पर मूल्यानुभूति महत्वपूर्ण है। प्रेम में स्वयं के स्थान पर दूसरा पात्र प्रमुख होता है। डॉ. त्रिपाठी ने घनानन्द, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की कई काव्य रचनाएँ जो प्रेम की अभिव्यक्ति को सार्थक करती है की विस्तृत चर्चा की। उन्होनें अशोक बाजपेयी की प्रेम कविताओं का पाठ भी किया।

संगोष्ठी में शास. दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव के प्राध्यापक एवं प्रखर वक्ता डॉ. चन्द्रकुमार जैन ने अपने संबोधन में कहा कि आज के दौर में जहाँ मानव आपाधापी और दौड़भाग में लगा है। ऐसी स्थिति में दिशाभ्रम होना स्वाभाविक है और ऐसी स्थिति से उबरने के लिए जो तत्व महत्वपूर्ण है वह प्रेम तत्व है। इस प्रेम तत्व की मीमांशा देशज और वैश्विक साहित्य में समान रूप से की गई है। कबीर और मीरा के पदों में उपस्थित प्रेम तत्व की व्याख्या करते हुए डॉ. चन्द्रकुमार ने कहा कि प्रेम चेतना जागृत करने और पहचानने के लिये संत कवियों की उत्कृष्ठ भावना को गहराई से समझना होगा।

उन्होनें कहा कि चांदनी रात में तो सब कुछ देखा जा सकता है किन्तु घोर अन्धकार में सब कुछ देखने की क्षमता केवल प्रेम तत्व में है।

संगोष्ठी में शोधार्थियों द्वारा शोधपत्र का वाचन भी किया गया। सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र वाचन के लिये डॉ. अम्बरीश त्रिपाठी को सम्मानित किया गया। शास. महा. दन्तेवाड़ा के प्राध्यापक डॉ. भुवाल सिंह ठाकुर ने अपने शोधपत्र में मानुष प्रेम की परीधि का विस्तार और परिवार विषय पर प्रकाश डाला। डॉ. आंचल श्रीवास्तव ने ''सुफियाना शैली में प्रेम'' पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। डॉ. सरिता भगत ने कालीदास के साहित्य में प्रेम पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। शोध सत्र के अध्यक्षता डॉ. रीता गुप्ता एवं डॉ. शीला शर्मा ने किया।

संगोष्ठी में विभिन्न महाविद्यालय से आये प्रतिभागी तथा प्राध्यापक उपस्थित थे। संगोष्ठी की आयोजन सचिव डॉ. यशेश्वरी ध्रुव ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा डॉ. ज्योति भरणे ने आभार प्रदर्शित किया।

निवेशक शिक्षा जागरूकता पर व्याख्यान माला

दिनांक : 16.02.2017

शासकीय डॉ. वा.वा. पाटणकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग के वाणिज्य विभाग में दिनांक 16.02.2017 को Investor Education Awarness Programme पर एक व्याख्यान माला आयोजित की गई। जिसमें मुख्य वक्ता ने छात्राओं को बचत एवं विनियोग का महत्व बताते हुए उसके विभिन्न स्त्रोतों के विषय में जानकारी दी साथ ही उन्होनें छात्राओं को मुद्रा बाजार एवं पूंजी बाजार के संबंध में बताते हुए इन बाजारों की गतिविधियों से अवगत कराया। उन्होनें छात्राओं को मुद्रा बाजार के नियंत्रक आर.बी.आई. तथा पूंजी बाजार के नियंत्रक SEBI की जानकारी देते हुए RBI तथा SEBI के नियमों एवं कर्त्तव्यों के संबंध में विस्तारपूर्वक समझाया।

इसके साथ ही छात्राओं को अपनी बचतों का विनियोग करने से पूर्व विनियोग करने वाली कंपनी के विषय में महत्वपूर्ण सूचना प्राप्त करने की बात समझाई। उन्होनें बताया कि बिना सूचना प्राप्त किए विनियोग करने से उन्हें उनकी बचतों पर लाभ की अपेक्षा हानि हो सकती है, अतः पूंजी बाजार में विनियोग से पूर्व बाजार की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। इसके उपरांत म्यूचल फण्ड में विनियोग एवं उस पर प्राप्त होने वाले प्रत्याय की सूचनाएँ प्रदान की।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. सुशीलचंद्र तिवारी ने किया तथा संचालन डॉ. के.एल.राठी ने किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. शशि कश्यप ने आभार प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में वाणिज्य विभाग के डॉ. विजय वासनिक, पूजा सोढ़ा तथा नेहा यादव उपस्थित थी।

शासकीय डॉ.वा.वा.पाटणकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

शोध प्रविधि पर तीन दिवसीय कार्यशाला

दिनांक : 13.04.2017

शासकीय डॉ. वा.वा. पाटणकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग में आई.क्यू.ए.सी. द्वारा शोध प्रविधि (रिसर्च मेथेडोलॉजी) पर तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। शोधार्थियों एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए आयोजित इस कार्यशाला के मुख्य वक्ता डॉ. राजीव चौधरी, विभागाध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर थे।

कार्यशाला में डॉ. चौधरी ने शोध प्रविधि की आधारभूत जानकारियाँ तीन दिवसीय कार्यशाला में दी। उन्होनें प्रयोगात्मक व्याख्या, प्रतिदर्शन, संबंधित–विषयवस्तु, शोध विश्लेषण की विधियों पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला।

डॉ. चौधरी ने शोधार्थियों को सांख्यिकी विश्लेषण की विधियाँ सिखाई। अपने व्याख्यान में उन्होनें शोध के नैतिक मूल्यों, नीतियों तथा होने वाली नकल पर चर्चा करते हुए शोध के क्षेत्र में नवाचार को प्रोत्साहन करने की विभिन्न योजनाएँ बतलाई। कार्यशाला में अपने संबोधन में महाविद्यालय के प्राचार्य, डॉ. सुशील चन्द्र तिवारी ने शोधकार्य के महत्व एवं आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि इस क्षेत्र में नया करने की चाह होनी चाहिए।

उन्होनें छात्राओं को आव्हान किया कि शोध की गहनता एवं गंभीरता के साथ गुणवत्ता को बनाए रखना हमारा दायित्व है। आई.क्यू.ए.सी. की समन्वयक डॉ. अमिता सहगल ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं नैक के द्वारा इस क्षेत्र में किए जा रहे महत्वपूर्ण प्रयासों की जानकारी छात्राओं की दी।

वाणिज्य विभाग की सहायक प्राध्यापक कु. पूजा सोढ़ा ने सांख्यिकी की शोधकार्य में भूमिका पर अपनी पावरपाईंट प्रस्तुति दी। कार्यशाला के प्रारंभ में आयोजन प्रभारी डॉ. रेशमा लॉकेश ने कार्यशाला के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विद्यार्थियों के लिए इसका शोध कार्यों में बहुत ही अधिक महत्व है।

कार्यशाला में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, भूगोल, गृहविज्ञान, वाणिज्य के शोध छात्राओं एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया। महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ.डी.सी. अग्रवाल ने कहा कि आई.क्यू.ए.सी. की इस पहल ने छात्राओं को शोध कार्य करने को प्रेरित किया है तथा डॉ. चौधरी से उन्हें महत्वपूर्ण जानकारियाँ मिली है। कार्यशाला में डॉ. अलका दुग्गल, डॉ. मीनाक्षी अग्रवाल, डॉ. ऋचा ठाकुर, डॉ. डोंगरे, डॉ. मोनिया राकेश, डॉ. मुक्ता बांखला, डॉ. ऋतु दुबे, पूजा सोढ़ा, रिमसा लॉकेश, नेहा यादव ने सहभागिता की।

कार्यशाला का संचालन एवं आभार प्रदर्शन संयोजक डॉ. रेशमा लॉकेश ने किया।